K. Nand M.A 11 Sem
4

जिन बच्चों को माता-पिता से डाँट-फटकार एवं उचित व्यवहार नहीं मिल पाता उनमें समाजोपयोगी गुणों का अभाव पाया जाता है।

संचार के आधुनिक संसाधन यथा- रेडियो, टेलीविजन, दैनिक समाचार पत्र आदि भी समाजिक शिक्षण के महत्त्वपूर्ण स्रोत होते हैं। अध्ययनों में पाया गया है जिन परिवारों में इन संसाधनों की उपलब्धता होती है उनके बच्चों में समाजीकरण की प्रक्रिया अधिक तीव्र होती है।

(2) साथियों का समूह :— साथी या मित्र भी सामाजिक शिक्षण के एक प्रमुख स्रोत हैं। परिवार के बाहर बच्चे समान उम्र के पास-पड़ोस के बच्चों के संपर्क में आता है। ये बच्चे विभिन्न परिवारों के होते हैं। इसके पश्चात इन्हें विद्यालय में प्रवेश मिलता है। इस प्रकार इन्हें दो उम्र स्तरों में विभक्त किया जा सकता है। पहला 3-5 वर्ष और दूसरा 5 वर्ष से अधिक उम्र स्तर। पहले को प्राक विद्यालय टोली और दूसरे विद्यालीय स्तर टोली की संज्ञा दी जा सकती है। ये आपस में मिलकर विभिन्न प्रकार के खेलों आयोजन करते हैं। इस दौरान ये काल्पनिक खेलों का भी आयोजन करते हैं और वे विभिन्न प्रकार की भूमिका भी अदा करते हैं। फलत: समाजीकरण की प्रक्रिया में तीव्रता आती है। चार्ल्सवर्थ तथा हार्टअप (1964) के अनुसार इस उम्र के बच्चों की टोली में प्राय: एक बच्चा दूसरे बच्चे पर अधिक ध्यान देता है तथा दूसरे का अनुमोदन प्राप्त करने की कोशिश करता है। इससे बच्चों में सामाजिक सहयोग की भावना जागृत होती है। इसके पश्चात जब इनका प्रवेश विद्यालय में होता है तो वे नई टोली बनाते हैं। यहाँ प्राक्स्कूल टोली की अपेक्षा अधिक समाजीकरण का विकास होते पाया गया है। यहाँ स्वाधीन एवं समाजविरोधी विचारों से ऊपर उठकर लोकतांत्रिकता की भावना का विकास होने के साथ-साथ

K-Nand M.A II Sem ①
3

को प्राथमिक समूह माना गया है। इसलिए सामाजिक शिक्षण का पहला अध्याय परिवार है। परिवार के सदस्यों यथा- माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-चाची आदि के बीच एक घनिष्ठ संबंध होता है। इनके बीच सहयोग- स्नेह की भावना अधिक मात्रा में पाई जाती है जिसका प्रभाव समाजीकरण की प्रक्रिया पर अधिक पड़ता है। लगभग सभी समाज मनो-विज्ञानों के बीच मतैक्य है कि परिवार ही वह संस्था है जहाँ बच्चे शिष्टाचार एवं नैतिकता की शिक्षा ग्रहण करता है। डीफ्लोयूर, एन्टोनियो एवं डीफ्लोयूर (1976) ने समाजीकरण ~~की महत्ता~~ में परिवार की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि— "संस्कृति एवं सामाजिक मूल्य के सार तत्वों को बच्चों को पढ़ाने की एवं उनके व्यक्तिगत विकास को निर्देशित करने की जवाबदेही हमेशा परिवार पर होती है।

परिवार में बच्चे की सबसे प्रथम अन्तः-क्रिया माता-पिता से होती है। अतः यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि बच्चों के समाजी-करण में बच्चों के साथ माता-पिता द्वारा किया गया व्यवहार अधिक महत्वपूर्ण होता है। समाज मनोविज्ञानियों द्वारा बच्चों के साथ होने वाले माता-पिता के व्यवहार को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है। इस संदर्भ में इनके द्वारा विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया गया है और हार्दिकता- विद्वेष एवं प्रतिबंधात्मकता- अनुज्ञात्मकता को अत्यन्त प्रभाव-शाली पाया है। कुछ माता-पिता ऐसे होते हैं जो अपने बच्चों को अधिक प्यार- दुलार करते हैं। इनमें हार्दिकता की मात्रा अधिक होती है। इसके विपरीत कुछ माता-पिता ऐसे होते हैं जो अपने बच्चों को अनावश्यक रूप से बात-बेबात डाँटते रहते हैं और उनके लिए अपशब्दों का व्यवहार करते रहते हैं। इनमें विद्वेष की मात्रा अधिक पाई जाती है। अध्ययनों में पाया गया कि जिन बच्चों ~~की~~ के माता-पिता में हार्दिकता अधिक होती है वे बच्चे सामाजिक गुणों एवं व्यवहारों में परिपूर्ण होते हैं। वहीं